विषय-सूची

द्विक-निपात (६-१०)

२. द्वितीय पंचाशतक

(६) १. पुद्गल वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - ८१
(७) २. सुख वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - ८४
(८) ३. सनिमित्त वर्ग - - - - - - - - - - - - - - ८६
(९) ४. धर्म वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - ८७
(१०) ५. बाल वर्ग - - - - - - - - - - - - - - - ८८

२. द्वितीय पंचाशतक

(६) १. पुद्गल वर्ग

५३. "भिक्षुओ, लोक में दो व्यक्ति बहुजन-हित के लिए, बहुजन-सुख के लिए उत्पन्न होते हैं, बहुत जनों के अर्थ, हित तथा देव-मनुष्यों के सुख के लिए उत्पन्न होते हैं।

"कौन-से दो व्यक्ति?

"सम्यक-संबुद्ध अर्हत तथागत और चक्रवर्ती-राजा। भिक्षुओ, ये दो व्यक्ति लोक में बहुजन-हित के लिए, बहुजन-सुख के लिए उत्पन्न होते हैं, बहुत जनों के अर्थ, हित तथा देव-मनुष्यों के सुख के लिए उत्पन्न होते हैं।"

५४. "भिक्षुओ, लोक में दो असाधारण मनुष्य जन्म लेते हैं।

"कौन-से दो?

"सम्यक संबुद्ध अर्हत तथागत और चक्रवर्ती-राजा।भिक्षुओ, लोक में ये दो असाधारण मनुष्य जन्म लेते हैं।"

५५. "भिक्षुओ, इन दो व्यक्तियों की मृत्यु बहुत जनों के अनुताप का कारण होती है।

"किन दो की?

"सम्यक संबुद्ध अर्हत तथागत की और चक्रवर्ती-राजा की।भिक्षुओ, इन दो व्यक्तियों की मृत्यु बहुत जनों के अनुताप का कारण होती है।"

५६. "भिक्षुओ, ये दो स्तूपार्ह हैं (जिनके अवशेष पर स्तूप बनाये जा सकते हैं)।

"कौन-से दो?

"सम्यक संबुद्ध अर्हत तथागत तथा चक्रवर्ती-राजा।

"भिक्षुओ, ये दो स्तूपार्ह हैं।"

५७. "भिक्षुओ, ये दो बुद्ध होते हैं।

"कौन-से दो?

"सम्यक संबुद्ध अर्हत तथागत तथा प्रत्येक-बुद्ध।

"भिक्षुओ, ये दो बुद्ध होते हैं।"

५८. "भिक्षुओ, ये दो बिजली के कड़कने पर डरते नहीं।

"कौन-से दो?

"क्षीणास्रव भिक्षु तथा श्रेष्ठ हाथी।

"भिक्षुओ, ये दो बिजली के कड़कने पर डरते नहीं।"

५९. "भिक्षुओ, ये दो बिजली के कड़कने पर डरते नहीं।

"कौन-से दो?

"क्षीणास्रव भिक्षु तथा श्रेष्ठ अश्व।

"भिक्षुओ, ये दो बिजली के कड़कने पर डरते नहीं।"

६०. "भिक्षुओ, ये दो बिजली के कड़कने पर डरते नहीं।

"कौन-से दो?

"क्षीणास्रव भिक्षु तथा मृगराज सिंह।

"भिक्षुओ, ये दो बिजली के कड़कने पर डरते नहीं।"

६१. "भिक्षुओ, दो बातों का विचार करकि न्नरमानुषी-भाषा नहीं बोलते।

"कौन-सी दो?

"हम झूठ न बोलें तथा गलत दोषारोपण न करें।

"भिक्षुओ, इन दो बातों का विचार करकि न्नरमानुषी-भाषा नहीं बोलते।"

६२. "भिक्षुओ, स्त्रियां दो बातों से असंतुष्ट रह कर ही शरीर त्याग करती हैं।

"कौन-सी दो से?

"मैथुन तथा संतानोत्पत्ति की इच्छा से।

"भिक्षुओ, स्त्रियां इन दो बातों से असंतुष्ट रह कर ही शरीर त्याग करती हैं।"

६३. "भिक्षुओ, तुम्हें असंत-सहवास तथा संत-सहवास के बारे में उपदेश देता हूं। इसे सुनो, अच्छी तरह मन में धारण करो। कहता हूं।" "अच्छा, भंते!" कह कर भिक्षुओं ने भगवानको प्रतिवचन दिया। भगवान ने यह कहा –

"भिक्षुओ, असंत-सहवास कैसा होता है? असंत कैसे रहते हैं?

"भिक्षुओ, स्थविर भिक्षु सोचता है –

"'स्थविर भिक्षु भी मुझे कुछ न कहे, मध्यम-स्थविर भी मुझे कुछ न कहे, नया भी मुझे कुछ न कहे; मैं भी न स्थविर भिक्षु को कुछ कहूं, न मध्यम-स्थविर को कुछ कहूं और न नये भिक्षु को कुछ कहूं।

"'स्थविर मुझे कुछ कहेंगे तो अहित की ही बात कहेंगे, हित की बात नहीं कहेंगे। मैं भी उन्हें ''नहीं'' कहकर कष्ट दूंगा और उनका कहना ठीक है, यह जानते हुए भी उनका कहना नहीं करूंगा। मध्यम-स्थविर भी मुझे कुछ कहेंगे, नये भिक्षु भी मुझे कुछ कहेंगे तो अहित की ही बात कहेंगे, हित की बात नहीं

कहेंगे।मैं भी उन्हें ''नहीं'' कहकर कष्ट दूंगा और उनका कहना ठीक है, यह जानते हुए भी उनका कहना नहीं करूंगा'।

"'मध्यम-स्थविर भी सोचता है... नया भिक्षु भी सोचता है –

"'स्थविर भी मुझे कुछ न कहे, मध्यम-स्थविर भी मुझे कुछ न कहे, नया भी मुझे कुछ न कहे, मैं भी न स्थविर भिक्षु को कुछ कहूं, न मध्यम-स्थविर को कुछ कहूं और न नये भिक्षु को कुछ कहूं।

"'स्थविर मुझे कुछ कहेंगे तो अहित की ही बात कहेंगे, हित की बात नहीं कहेंगे।मैं भी उन्हें ''नहीं'' कहकर कष्ट दूंगा और उनका कहना ठीक है, यह जानते हुए भी उनका कहना नहीं करूंगा।मध्यम-स्थविर भी मुझे कुछ कहेंगे, नये भिक्षु भी मुझे कुछ कहेंगे तो अहित की ही बात कहेंगे, हित की बात नहीं कहेंगे।मैं उन्हें ''नहीं'' कहकर कष्ट दूंगा और उनका कहना ठीक है, यह जानते हुए भी उनका कहना नहीं करूंगा।' भिक्षुओ, इस प्रकार असंत-सहवास होता है। असंत इसी प्रकार रहते हैं।

"भिक्षुओ, संत-सहवास कैसा होता है? संत कैसे रहते हैं?

"भिक्षुओ, स्थविर भिक्षु सोचता है –

"'स्थविर भिक्षु भी मुझे कहे, मध्यम-स्थविर भी मुझे कहे, नया भिक्षु भी मुझे कहे; मैं भी स्थविर भिक्षुओं को कहूं, मध्यम-स्थविरों को कहूं, नये भिक्षु को कहूं।

"'स्थविर मुझे कुछ कहेंगे तो हित की ही बात कहेंगे, अहित की बात नहीं कहेंगे।मैं भी उन्हें ''अच्छा'' कहूंगा और कष्ट नहीं दूंगा। उनका कहना ठीक है, यह जानते हुए मैं उनका कहना करूंगा।मध्यम-स्थविर भी मुझे कुछ कहेंगे, नया भिक्षु भी मुझे कुछ कहेगा तो हित की ही बात कहेगा, अहित की बात नहीं कहेगा।मैं भी उन्हें ''अच्छा'' कहूंगा और कष्ट नहीं दूंगा। उनका कहना ठीक है, यह जानते हुए मैं उनका कहना करूंगा।' भिक्षुओ, इस प्रकार संत-सहवास होता है। संत इसी प्रकार रहते हैं।"

६४. "भिक्षुओ, जिस अधिकरण में दोनों ओर से कहा-सुनी रहेगी, दृष्टि-परिदाह रहेगा, चित्त कुपित रहेगा, दौर्मनस्य रहेगा, क्रोध रहेगा, आंतरिक अशांति रहेगी, उस अधिकरण के बारे में भिक्षुओ, यह आशा करनी चाहिए कि उनका कलह दीर्घकाल तक जारी रहेगा, वे परस्पर कठोर बोलते रहेंगे और हिंस्र बने रहेंगे तथा भिक्षु सुखपूर्वक न रह सकेंगे।

"भिक्षुओ, जिस अधिकरण में दोनों ओर से कहा-सुनी न होगी, दृष्टि-परिदाह न होगा, चित्त कुपित न रहेगा, दौर्मनस्य न रहेगा, क्रोध न रहेगा,

आंतरिक शांति रहेगी, उस अधिकरण के बारे में भिक्षुओ, यही आशा करनी चाहिए कि न उनका कलह दीर्घकाल तक जारी रहेगा, न वे परस्पर कठोर बोलते रहेंगे और न हिंस्र ही बने रहेंगे तथा भिक्षु सुखपूर्वक रह सकेंगे।"

* * * * *

(७) २. सुख वर्ग

६५. "भिक्षुओ, ये दो सुख हैं।

"कौन-से दो?

"गृहीसुख तथा प्रव्रज्या-सुख।

"भिक्षुओ, ये दो सुख हैं। इन दोनों सुखों में यह प्रव्रज्या-सुख ही श्रेष्ठ है।"

६६. "भिक्षुओ, ये दो सुख हैं।

"कौन-से दो?

"कामभोगों का सुख तथा नैष्कर्म्यसुख।

"भिक्षुओ, ये दो सुख हैं। इन दोनों सुखों में यह नैष्कर्म्यसुख ही श्रेष्ठ है।"

६७. "भिक्षुओ, ये दो सुख हैं।

"कौन-से दो?

"उपधिसुख तथा निरुपधिसुख।[१]

"भिक्षुओ, ये दो सुख हैं। भिक्षुओ, इन दोनों सुखों में यह निरुपधिसुख ही श्रेष्ठ है।"

६८. "भिक्षुओ, ये दो सुख हैं।

"कौन-से दो?

"सास्रव-सुख तथा अनास्रव-सुख।

"भिक्षुओ, ये दो सुख हैं। भिक्षुओ, इन दो सुखों में यह अनास्रव-सुख ही श्रेष्ठ है।"

६९. "भिक्षुओ, ये दो सुख हैं।

"कौन-से दो?

---

१ **'उपधि सुख, निरुपधि सुख'** -- भव-तृष्णा के प्रति आसक्त रहने का सुख उपधिसुख है तथा तृष्णातीत हो जाने का सुख निरुपधि सुख है। उपधिसुख को तेभूमक सुख भी कहते हैं, अर्थात कामावचर, रूपावचर और अरूपावचर भूमि का सुख। निरुपधि सुख को लोकोत्तर सुख कहते हैं।

"भौतिक-सुख तथा अभौतिक-सुख।

"भिक्षुओ, ये दो सुख हैं। भिक्षुओ, इन दो सुखों में अभौतिक-सुख ही श्रेष्ठ है।"

७०. "भिक्षुओ, ये दो सुख हैं।

"कौन-से दो?

"आर्य-सुख तथा अनार्य-सुख।

"भिक्षुओ, ये दो सुख हैं। भिक्षुओ, इन दो सुखों में यह आर्य-सुख ही श्रेष्ठ है।"

७१. "भिक्षुओ, ये दो सुख हैं।

"कौन-से दो?

"कायिक-सुखतथा चैतसिक-सुख।

"भिक्षुओ, ये दो सुख हैं। भिक्षुओ, इन दो सुखों में यह चैतसिक-सुख ही श्रेष्ठ है।"

७२. "भिक्षुओ, ये दो सुख हैं।

"कौन-से दो?

"प्रीति-सहित सुख, प्रीति-रहित सुख।

"भिक्षुओ, ये दो सुख हैं। भिक्षुओ, इन दो सुखों में यह प्रीति-रहित सुख ही श्रेष्ठ है।"

७३. "भिक्षुओ, ये दो सुख हैं।

"कौन-से दो?

"आनंद-सुख तथा उपेक्षा-सुख[1]।

"भिक्षुओ, ये दो सुख हैं। भिक्षुओ, इन दो सुखों में यह उपेक्षा-सुख ही श्रेष्ठ है।"

७४. "भिक्षुओ, ये दो सुख हैं।

"कौन-से दो?

"समाधि-सुख तथा असमाधि-सुख।

"भिक्षुओ, ये दो सुख हैं। भिक्षुओ, इन दोनों सुखों में समाधि-सुख ही श्रेष्ठ है।"

---

१ सात सुख और **उपेक्खा सुख** – प्रथम तीन ध्यानों का सुख सात सुख है क्योंकि इनमें 'प्रीति' ध्यानांग रहता है और चतुर्थ ध्यान का सुख उपेक्षा-सुख।

७५. "भिक्षुओ, ये दो सुख हैं।

"कौन-से दो?

"स-प्रीति-आलंबन-सुख तथा अ-प्रीति-आलंबन-सुख।

"भिक्षुओ, ये दो सुख हैं। भिक्षुओ, इन दोनों सुखों में अ-प्रीति-आलंबन सुख ही श्रेष्ठ है।"

७६. "भिक्षुओ, ये दो सुख हैं।

"कौन-से दो?

"आनंद-आलंबन-सुख तथा उपेक्षा-आलंबन-सुख।

"भिक्षुओ, ये दो सुख हैं। भिक्षुओ, इन दोनों सुखों में उपेक्षा-आलंबन-सुख ही श्रेष्ठ है।"

७७. "भिक्षुओ, ये दो सुख हैं।

"कौन-से दो?

"रूप-आलंबन-सुख तथा अरूप-आलंबन-सुख।

"भिक्षुओ, ये दो सुख हैं। भिक्षुओ, इन दोनों सुखों में यह अरूप-आलंबन-सुख ही श्रेष्ठ है।"

* * * * *

(८) ३. सनिमित्त वर्ग

७८. "भिक्षुओ, पापी अकुशल-धर्म निमित्त (आधार) होने से उत्पन्न होते हैं, बिना निमित्त के नहीं उत्पन्न होते। उस निमित्त का ही प्रहाण कर देने से वे पापी अकुशल-धर्म उत्पन्न नहीं होते।"

७९. "भिक्षुओ, पापी अकुशल-धर्म निदान (कारण) होने से उत्पन्न होते हैं, बिना निदान के नहीं। उस निदान का ही प्रहाण कर देने से वे पापी अकुशल-धर्म उत्पन्न नहीं होते।"

८०. "भिक्षुओ, पापी अकुशल-धर्म हेतु होने से उत्पन्न होते हैं, बिना हेतु के नहीं। उस हेतु का ही प्रहाण कर देने से वे पापी अकुशल-धर्म उत्पन्न नहीं होते।"

८१. "भिक्षुओ, पापी अकुशल-धर्म संस्कार होने से उत्पन्न होते हैं, बिना संस्कार के नहीं। उस संस्कार का ही प्रहाण कर देने से वे पापी अकुशल-धर्म उत्पन्न नहीं होते।"

८२. "भिक्षुओ, पापी अकुशल-धर्म प्रत्यय होने से उत्पन्न होते हैं, बिना प्रत्यय के नहीं। उस प्रत्यय का ही प्रहाण कर देने से वे पापी अकुशल-धर्म उत्पन्न नहीं होते।"

८३. "भिक्षुओ, पापी अकुशल-धर्म रूप होने से ही उत्पन्न होते हैं, बिना रूप के नहीं। उस रूप का ही प्रहाण कर देने से वे पापी अकुशल-धर्म उत्पन्न नहीं होते।"

८४. "भिक्षुओ, पापी अकुशल-धर्म वेदना के होने से ही उत्पन्न होते हैं, बिना वेदना के नहीं। उस वेदना का ही प्रहाण कर देने से वे पापी अकुशल-धर्म उत्पन्न नहीं होते।"

८५. "भिक्षुओ, पापी अकुशल-धर्म संज्ञा होने से ही उत्पन्न होते हैं, बिना संज्ञा के नहीं। उस संज्ञा का ही प्रहाण कर देने से वे पापी अकुशल-धर्म उत्पन्न नहीं होते।"

८६. "भिक्षुओ, पापी अकुशल-धर्म विज्ञान होने से ही उत्पन्न होते हैं, बिना विज्ञान के नहीं। उस विज्ञान का ही प्रहाण कर देने से पापी अकुशल-धर्म उत्पन्न नहीं होते।"

८७. "भिक्षुओ, पापी अकुशल-धर्म संस्कृत-आलंबन होने से ही उत्पन्न होते हैं, बिना संस्कृत-आलंबन के नहीं। उस संस्कृत-आलंबन का ही प्रहाण कर देने से पापी अकुशल-धर्म उत्पन्न नहीं होते।"

* * * * *

(९) ४. धर्म वर्ग

८८. "भिक्षुओ, ये दो धर्म हैं।
"कौन-से दो?
"चित्त-विमुक्ति तथा प्रज्ञा-विमुक्ति।
"भिक्षुओ, ये दो धर्म हैं।"

८९. "भिक्षुओ, ये दो धर्म हैं।
"कौन-से दो?
"वीर्य (प्रयत्न, प्रग्रह) तथा अविक्षेप (चित्तैकाग्रता)
"भिक्षुओ, ये दो धर्म हैं।"
(आगे के सूत्र इसी क्रम से हैं।)

९०. "नाम और रूप।"

९१. "विद्या तथा विमुक्ति।"

९२. "भव-दृष्टि तथा विभव-दृष्टि।"

९३. "निर्लज्जता तथा अ-पापभीरुता।"

९४. "लज्जा तथा पापभीरुता।"

९५. "दुर्वचता तथा पापमित्रता।"

९६. "सुवचता तथा कल्याणमित्रता।"

९७. "(अट्ठारह) धातुओं के ज्ञान में कुशल होना तथा मनसिकार (सही ढंग से चिंतन करने) में कुशल होना।"

९८. "भिक्षुओ, ये दो धर्म हैं।

"कौन-से दो?

"आपत्ति (दोषों) के ज्ञान में कुशल होना तथा दोषों को दूर करने का कौशल।

"भिक्षुओ, ये दो धर्म हैं।"

* * * * *

(१०) ५. बाल वर्ग

९९. "भिक्षुओ, ये दो मूर्ख हैं।

"कौन-से दो?

"जो अनागत-भार वहन करता है तथा जो आगत-भार वहन नहीं करता।

"भिक्षुओ, ये दो मूर्ख हैं।"

१००. "भिक्षुओ, ये दो पंडित हैं।

"कौन-से दो?

"जो अनागत-भार वहन नहीं करता तथा जो आगत-भार वहन करता है।

"भिक्षुओ, ये दो पंडित हैं।"

१०१. "भिक्षुओ, ये दो मूर्ख हैं।

"कौन-से दो?

"जो उचित को अनुचित समझे तथा जो अनुचित को उचित समझे।

"भिक्षुओ, ये दो मूर्ख हैं।"

१०२. "भिक्षुओ, ये दो पंडित हैं।

"कौन-से दो?

"जो अनुचित को अनुचित समझे तथा जो उचित को उचित समझे।

"भिक्षुओ, ये दो पंडित हैं।"

१०३. "भिक्षुओ, ये दो मूर्ख हैं।

"कौन-से दो?

"जो अदोष कोदोष समझता है तथा जो दोष कोअदोष समझता है।

"भिक्षुओ, ये दो मूर्ख हैं।"

१०४. "भिक्षुओ, ये दो पंडित हैं।

"कौन-से दो?

"जो अदोष कोअदोष समझता है तथा जो दोष कोदोष समझता है।

"भिक्षुओ, ये दो पंडित हैं।"

१०५. "भिक्षुओ, ये दो मूर्ख हैं।

"कौन-से दो?

"जो अधर्म को धर्म समझता है तथा जो धर्म को अधर्म समझता है।

"भिक्षुओ, ये दो मूर्ख हैं।"

१०६. "भिक्षुओ, ये दो पंडित हैं।

"कौन-से दो?

"जो धर्म को धर्म समझता है तथा जो अधर्म को अधर्म समझता है।

"भिक्षुओ, ये दो पंडित हैं।"

१०७. "भिक्षुओ, ये दो मूर्ख हैं।

"कौन-से दो?

"जो अविनय (अनियम) कोविनय (नियम) समझता है, तथा जो विनय को अविनय समझता है।

"भिक्षुओ, ये दो मूर्ख हैं।"

१०८. "भिक्षुओ, ये दो पंडित हैं।

"कौन-से दो?

"जो अविनय कोअविनय समझता है तथा जो विनय कोविनय समझता है।

"भिक्षुओ, ये दो पंडित हैं।"

१०९. "भिक्षुओ, इन दो के आस्रव बढ़ते हैं।

"कि न दो के ?

"जो अकौकृतव्यके विषय में कौकृत्य(पश्चात्ताप) क रता है तथा जो कौकृतव्यके विषय में अकौकृत्यक रता है।

"भिक्षुओ, इन दो के आस्रव बढ़ते हैं।"

११०. "भिक्षुओ, इन दो के आस्रव नहीं बढ़ते।

"किन दो के ?

"जो अकौकृत्यके विषय में अकौकृत्यकरता है तथा जो कौकृतव्यके विषय में कौकृत्यकरता है।

"भिक्षुओ, इन दो के आस्रव नहीं बढ़ते।"

१११. "भिक्षुओ, इन दो के आस्रव बढ़ते हैं।

"किन दो के ?

"जो अनुचित को उचित समझता है तथा जो उचित को अनुचित समझता है।

"भिक्षुओ, इन दो के आस्रव बढ़ते हैं।"

११२. "भिक्षुओ, इन दो के आस्रव नहीं बढ़ते।

"किन दो के ?

"जो अनुचित को अनुचित समझता है तथा जो उचित को उचित समझता है।

"भिक्षुओ, इन दो के आस्रव नहीं बढ़ते हैं।"

११३. "भिक्षुओ, इन दो के आस्रव बढ़ते हैं।

"किन दो के ?

"जो अनापत्ति (अदोष) को आपत्ति (दोष) समझता है तथा जो आपत्ति को अनापत्ति समझता है।

"भिक्षुओ, इन दो के आस्रव बढ़ते हैं।"

११४. "भिक्षुओ, इन दो के आस्रव नहीं बढ़ते।

"किन दो के ?

"जो अनापत्ति को अनापत्ति समझता है तथा जो आपत्ति को आपत्ति समझता है।

"भिक्षुओ, इन दो के आस्रव नहीं बढ़ते हैं।"

११५. "भिक्षुओ, इन दो के आस्रव बढ़ते हैं।

"किन दो के ?

"जो अधर्म को धर्म समझता है तथा जो धर्म को अधर्म समझता है।

"भिक्षुओ, इन दो के आस्रव बढ़ते हैं।"

११६. "भिक्षुओ, इन दो के आस्रव नहीं बढ़ते हैं।

"किन दो के ?

"जो अधर्म को अधर्म समझता है तथा जो धर्म को धर्म समझता है।

"भिक्षुओ, इन दो के आस्रव नहीं बढ़ते हैं।"

११७. "भिक्षुओ, इन दो के आस्रव बढ़ते हैं।

"किन दो के ?

"जो अविनय को विनय समझता है तथा जो विनय को अविनय समझता है।

"भिक्षुओ, इन दो के आस्रव बढ़ते हैं।"

११८. "भिक्षुओ, इन दो के आस्रव नहीं बढ़ते हैं ।

"किन दो के ?

"जो अविनय को अविनय समझता है तथा जो विनय को विनय समझता है।

"भिक्षुओ, इन दो के आस्रव नहीं बढ़ते हैं।"

* * * * *